Vol 4 Issue 2 March 2014

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-4 | Issue-2 | March-2014
Available online at www.isrj.net

साठोत्तरी काव्य मे शिल्पविधान

झेलम झेंडे

असिस्टंट प्रोफेसर (हिंदी विभाग)रयत शिक्षण संस्थावीर वाजेकर अे.एस.सी. कॉलेज, फुंडे ता.उरण जि.रायगड (महाराष्ट्र)

सारांश :- सामान्यतः साठोत्तरी कवि और नई कवि एक दुसरे से संबंधित है | प्रायः अभी आलोचक इस बात को लेकर सहमत है कि १९६० के बाद हिंदी साहित्य सभी विधाओं में अपने पूर्ववर्ती स्वरूप से अलग बनाने की प्रकिया शुरू हो गई है| इसकी पहली शुरूवात काव्य के क्षेत्र में हो गई है | इस अलगाव की प्रमुख पहचान उसकी व्यक्तिवादीता से बाहर निकलकर जन चेतना के साथ जुड जाने में दिखायी देती है यह साठोत्तरी कवि भाव एवं विषयों की दृष्टि से अत्यंत व्यापक रही है| साथ ही इस काल में काव्य के अनेकवाद प्रचलित रहे है| इसीकारण इसे कोई एक निश्चित नाम देना संभव नही हो पाया और काल विशेष की दृष्टि से उसे साठोत्तरी कविता कहा जाने लगा | साठोत्तरी कविता में अनेक प्रकार के वाद प्रचलित है उनके अनेक नामकरण भी किए गए है इसमें समकालीन कविता,अकविता,विचारकविता,चेतनावादी कविता,नवककविता,सहज कविता, वीत कविता , अस्वहित कविता, अभिनव कविता आदि अनेक नामों मे इसे जाना जाता है |

प्रस्तावना :

इस प्रकार साठोत्तरी काव्यधारा का ऐसा अजस्त्र प्रवाह है जो अपने साथ अनेक काव्य आंदोलनों को लसन ६० के बाद कविता में असंतोष अस्वीकृती और विद्रोह का स्तर बहोत साफ तौर पर दिखायी देता है | यह स्तर नई कविता में भी था किंतु साठोत्तर के बाद इस स्तर ने व्यंग्य तथा विद्रोह का रूप धारण कर लिया है| जीवन की टूटती मुर्तियों के बहोत करीब जाकर उनकी टूटने की तल्खी व्यथा और उनमें से फुटती हुई अस्वीकृति की उग्रता आदि को पहचाना है साठोत्तरी कविता की सबसे बडी विशेषता यही है कि उसने समग्र जीवन का प्रामाणिक अनुभूतियों को उनके जीवन परिवेश के साथ व्यक्त किया है| विषय या अनुभूति के अभिजात्य और भिन्न भिन्न दृष्टियों या वादों से बने हुए अनेक घेरों को तोड़कर व्यक्ति दवारा भोगे जानेवाले जीवन के प्रत्येक छोटे बडे सत्य को प्रतीको और बिम्बों के माध्यम से उभारने में ही उसके सार्थकता समझी किंतु कुल मिलाकर कहना पडेगा कि साठोत्तरी कविता संक्राति अन्य संत्रास यातना तुरंग दुविधा आदि की अनुभूति की कविता है साठोत्तर कविता की शिल्पात्मकता इसप्रकार देखी जा सकती है |

भाषा

साठोत्तरी कविता की भाषा कुछ गदय की ओर नहीं है उसने काव्यभाषा का रूप छोडकर ठेठ भाषा का रूप धारण कर लिया है | उसने सपाठ बयानी का अधिक सहारा लिया है सपाट बयानी से वह जीवन के महत्वपूर्ण गंभीर सत्य को ईमानदारी के साथ सहज भाषा में प्रकट करता है| उसकी भाषा जीवन की सच्चाई के साथ जुडी है उसके कारण भाषा चुस्त पैनी और आकमक हो गई है शब्दचयन में पुरी स्वतंत्रता से काम किया है| राजनीतिक शब्दों की भरमार है उससे वह साधारण जनता के साथ जुडने में सफल हुआ है| साठोत्तरी काव्य में देशज तत्सम उर्दू के शब्दों की भरमार देखी जाती है |

तत्सम

स्पर्शातीत स्पन्दन श्वासाहत धारयित्री कनिवार रूध्द कर्णिकार अनावृता अपराजिता मन्त्रपूत परित्राण उद्वलित आदि .

देशज ग्राम्य एवं बोलचाल के शब्द

छोरियां लुनाई फुदकी कनवतियां दुह कल्मल त्रिसूल कनियां खुदबुद पूनो बिछली टीटरा नैन अछूती ज्योतिमय हलचल थपेड़े आदि अज्ञेय जी ने अपनी काव्य भाषा में नाद सौन्दर्य का समावेश करने के लिए ऐसे शब्द युग्मों का प्रयोग किया है जो पदार्थ की किया एवं ध्वनि पूर्णतः को प्रस्तुत करते है |
शब्द मैत्री के प्रयोग से वे भाषा को अधिक प्रभावपूर्ण बनाते हैं तथा अर्थवत्ता में सजीवता भी लाते हैं |
यथा चुपचाप सॉझ सवेरे गुंज अनुगूंज
स्वरसंभार जीवन कांचन गेह गुफा आदि

द्वित्व वर्णों के प्रयोग से

उन्होंने एक ओर तो ध्वनि सौन्दर्य की सृष्टि की तो दुसरी ओर अर्थ गौरव में वृथि हुई है इस प्रकार के प्रयोगों में कम शब्दों में ही बहुत कुछ कह दिया गया है |

यथा झरते झरते सॉय सॉय अलग अलग
छुल छुल टुन टुन धीरे धीरे डाली डाली आदि

प्रतीक और बिम्ब योजना

साठोत्तरी कविता प्रतिकों एवं बिम्बो से भरी हुई है परंपरागत प्रतीकों का उन्होंने व्यापक प्रयोग किया है किंतु उनके अर्थ बदल दिये गए हैं| उसने अनेक नए प्रतीकों का सजग सचेष्ट और सतर्कता से निर्माण किया है बिम्ब योजना में भी उसरे अपनी सर्जनात्मक शक्ति का सहयोग लिया हैं| अनेक सुक्षम बिम्बों का निर्माण किया है जिसमें उसने अपने हृदय को घनीभूत पीडा अंतर का दर्द तीव्र अनुभुति और संमिश्रित मानसिकता का सहारा लिया है अनः कटा जा सकता है कि साठोत्तती कवि प्रतीक और बिम्बो के प्रयोग में अत्यंत जागृक और कुशल हैं|

अज्ञेय जी द्वारा लिखित बहुचर्चिता कविता नदी के द्वीप जिसमें उन्होंने प्रतीकात्मक शैली में यह प्रतिपादित किया है कि व्यक्ति की स्थिति समाज में एक द्वीप की भांति है उसमें नदी समाज का प्रतीक है तथा द्वीप व्यक्ति का प्रतीक है | समाज में व्यक्ति अपना व्यक्तित्व एवं अस्तित्व है | उसे समाज से अलग करके नहीं देखा जा सकता उसी प्रकार जैसे द्वीप का निर्माण नदी में ही होता है | व्यक्ति अपने व्यक्तित्व की रक्षा करते हुए समाज के प्रति अपना समर्पण करना चाहिए |

"हम नदी के द्वीप है
हम नहीं कहते कि हमको छोडकर
स्त्रोतास्विनी बह जाए
वह हमें आकार देती है
हमारे कोठा गलियं अन्तरीप उभार सैकस कूल
सब गोलाईयां उसकी गढी है
मां है वहै इसीसे हम बने है "

मिथकीय प्रयोग

साठोत्तरी कविता में कुछ निपेध परख कविताएँ ऐसी है जिसमें रूग्न मानसिकता का प्रभाव है यौन स्वतंत्रता और वैचारिक अराज़कता का प्रवाह ऐसे स्थानें पर समाजिक संस्कृतिक मिथकों का सफल प्रयोग किया गया है |

उपमानों की नविनता

साठोत्तरी कविता में छोटी छोटी कविताओं से लेकर दीर्घ या लंबी कविताएँ लिखी गई है | लंबी कविताएँ समाजिक यर्थाथ और बदलते जीवनानुभवों के पहलुओं को खोजती हुई एक विशिष्ट संवदेनात्मक व्यक्तित्व प्राप्त करती है धूमील की मोचीराम नागार्जुन की 'हरिजन गाथा' आदि लंबी कविताएँ प्रमुख हैं| किन्तु इस काव्यधारा के अधिकतर कवियों ने पाठयुक्त काव्यरूप को अपनाया है गति अन्य की भी कुछ रचनाएँ मिलती है नए नए देशी विदेशी काव्यरूपों को भी अपनाया गया है उर्दु की गजल फारसी रूबाई अगेंजी का स्यॉनेट सुनिता जपान की हयकु चीनी टक्क आदि अनेक छंद पध्दतियॉं अपनायी गयी है| गजलों में कुमार स्वॉनट हायकू में अज्ञेय उल्लेखनीय है |

अज्ञेय जी उपमा अलंकार के लिए नए नए उपमानोंका चयन करते हैं |

यथा
वासना के पंक सी फैली हुई थी धारयित्री |
स्फटिक मुकुर सा निर्मल वापी का तल |
तुम्हारे नैन पहले भोर की दो ओस बूंदे है |
मैं बज्र कटोर हूँ |
तुम्हारी देह मुझको कनक चम्पे की कली है |

इस प्रकार साठोत्तरी काव्यधारा का ऐसा अजस्त्र प्रवाह है जो अपने साथ अनेक काव्य आंदोलनों को लेकर चलता है | उस काल में अनेक नये काव्य आंदोलनों ने जन्म लिया और उनका समापन भी हुआ उन्होंने साठोत्तरी कविता को यथा रूप देने का प्रयास भी किया इन्हीं काव्य आंदोलनों से गुजरती हुई यह काव्यधारा आज के युग को प्राप्त हुई है |

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net